प्रकाशन तिथि : 01 मार्च, 2025
प्रेषण तिथि : 04 मार्च, 2025

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2024-2026
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 28 | अंक 24 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

त्याग और बलिदान से बना है गौरवशाली इतिहास: शेखावत

(सेतरावा में समारोहपूर्वक मनाई राव देवराज राठौड़ की 663वीं जयंती)

हमारा इतिहास इतना गौरवशाली हमारे पूर्वजों के त्याग और बलिदान से बना है। राष्ट्रनायक दुगार्दास, वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप, वीर शिरोमणि राव देवराज राठौड़ जैसे महापुरुषों को हम सैकड़ों वर्षों बाद भी स्मरण करते हैं और उनके वंशज होने पर गर्व अनुभव करते हैं तो इसका कारण उनके द्वारा किया गया त्याग और बलिदान ही है। हम अपने इतिहास पर गर्व करते हैं लेकिन आने वाली पीढ़ी को उस त्याग और बलिदान का पाठ पढ़ाने का प्रयत्न नहीं करते जिसके बल पर हमारे पूर्वजों ने इस गौरवशाली इतिहास का निर्माण किया था। वर्तमान में हम समाज को शक्तिशाली बनाने, अधिक नौकरियां दिलाने, राजनीतिक क्षेत्र में मजबूत करने आदि विषयों पर चर्चा करते हैं, लेकिन समाज को यदि वास्तविक अर्थों में मजबूत बनाना है तो शक्ति और सामर्थ्य के साथ ही संस्कार भी जरूरी है। युवा पीढ़ी में क्षत्रियोचित संस्कार निर्मित हों, उसके लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करने चाहिए। उपरोक्त बात केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने 14 फरवरी को जोधपुर जिले की शेरगढ़ तहसील के सेतरावा गांव में वीर शिरोमणि राव देवराज राठौड़ की 663वीं जयंती पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि हमें अपनी धरोहर को बचाने के लिए सक्रिय होना होगा। ओरण और गोचर भूमि भी हमारी ऐसी ही धरोहर है जिसके संरक्षण के लिए कानूनी उपायों के साथ ही पर्यावरण और प्रकृति के महत्व को लेकर समाज में जागरूकता लाने के लिए भी कार्य करने की आवश्यकता है। बावकान तालाब स्थित राव देवराज जी के स्मारक पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शेरगढ़ विधायक बाबू सिंह राठौड़ ने कहा कि युवाओं को नशे आदि कुप्रवृत्तियों से दूर रहते हुए समाज को आगे बढ़ाने में अपना योगदान देना चाहिए। युवा पीढ़ी जागरूक होगी तभी समाज से कुरीतियां समाप्त हो सकेंगी। कांग्रेस नेता उम्मेद सिंह राठौड़ ने कहा कि हमें राजनैतिक मतभेदों को भूलकर समाज की जाजम पर एक हो जाना चाहिए। हम जहां भी जिस भी भूमिका में हो, उसमें रहते हुए भी समाज के प्रति अपने दायित्व को अवश्य निभाना चाहिए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

छह राजपूत बने भाजपा जिलाध्यक्ष

हाल ही में भारतीय जनता पार्टी द्वारा राजस्थान में 39 जिला अध्यक्ष नियुक्त किए गए हैं जिनमें छह राजपूत जिलाध्यक्ष नियुक्त हुए हैं। नवनियुक्त राजपूत भाजपा जिलाध्यक्षों की सूची इस प्रकार है :-

गोवर्धन सिंह जादौन जिला-करौली

नरेश सिंह सिकरवार जिला-बारां

चंद्रवीर सिंह चौहान जिला-टोंक

त्रिभुवन सिंह भाटी जिला जोधपुर देहात दक्षिण

महावीर सिंह कृष्णावत जिला-प्रतापगढ़

गजपाल सिंह राठौड़ जिला-उदयपुर शहर

पंकज कुमार सिंह बने दिल्ली सरकार में मंत्री

बिहार के बक्सर जिले के ब्राह्मपुर प्रखंड के गांव धरौली के मूल निवासी पंकज कुमार सिंह को दिल्ली मंत्री मंडल में कैबिनेट मंत्री बनाया गया है। उन्होंने 20 फरवरी को आयोजित दिल्ली सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में मंत्री पद की शपथ ग्रहण की। दिल्ली की विकासपुरी विधानसभा से जीतकर विधायक बने पंकज कुमार सिंह पेशे से डॉक्टर हैं। उन्होंने बिहार की मगध यूनिवर्सिटी से बैचलर ऑफ डेंटल सर्जरी की पढ़ाई की है।

महाराणा भूपाल सिंह की जयंती पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन

उदयपुर स्थित भूपाल नोबल्स संस्थान के प्रताप चौक में 24 फरवरी को विद्या प्रचारिणी सभा के तत्वावधान में संस्था के संस्थापक मेवाड़ के पूर्व महाराणा भूपाल सिंह की 141वीं जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। जयंती कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राजसमंद सांसद महिमा कुमारी मेवाड़ ने कहा कि भारत की स्वतंत्रता से पूर्व सन् 1923 में ही महाराणा भूपाल सिंह ने मेवाड़ की आने वाली पीढ़ियों के लिए शिक्षा की आवश्यकता को अनुभव कर लिया था और उस आवश्यकता को पूरा करने के लिए इस शिक्षण संस्थान की परिकल्पना को मूर्त रूप दिया। उनकी दूरदर्शिता और अपनी प्रजा के प्रति हितचिंतन की भावना का यह प्रत्यक्ष प्रमाण है। वे एक कुशल प्रशासक होने के साथ ही महान शिक्षाविद भी थे जिन्होंने शिक्षा के प्रति लोगों को केवल जागरूक ही नहीं किया बल्कि समाज के सभी वर्गों को शिक्षा उपलब्ध कराने हेतु भरसक प्रयास भी किए। उन्होंने आगे कहा कि आज के युवाओं का यह दायित्व है कि वे भारत की सभ्यता, संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों को अंगीकार करें और उन्हें महत्व प्रदान करें। उन्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि श्रेष्ठ जीवन मूल्य ही श्रेष्ठ परिवार, समाज और राष्ट्र का निर्माण करते हैं। (शेष पृष्ठ 7 पर)

विवाह के अवसर पर कुरीतियों से दूर रहने का संदेश

समाज में विवाह के अवसरों पर कुरीतियों को त्यागने के साथ ही शिक्षा नेग देकर सामाजिक प्रगति में सहयोगी बनने का सकारात्मक संदेश देने के अनेकों उदाहरण समाजबंधुओ द्वारा प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इसी क्रम में श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक गणपत सिंह अवाय की पुत्री हेमंत कंवर का विवाह 16 फरवरी को पाली जिले के गुड़ा रामसिंह गांव के निवासी घनश्याम सिंह के पुत्र परमवीर कौशलेंद्र सिंह के साथ संपन्न हुआ जिसमें किसी भी प्रकार का दहेज व टीका नहीं लिया गया। विवाह सादगीपूर्ण रहा एवं पूर्ण रूप से नशा व मांसाहार से मुक्त रहा। विवाह में माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास भी उपस्थित रहे। 14 फरवरी को बालोतरा जिले की सिवाना तहसील के पादरू गांव के निवासी हरि सिंह की पुत्री का विवाह जोधपुर जिले के पीपली गांव के निवासी छोटू सिंह के पुत्र के साथ संपन्न हुआ। इस विवाह में वर पक्ष ने वधू पक्ष की ओर से टीके के रूप में प्रस्तुत राशि ससम्मान अस्वीकार कर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। दोनों पक्षों की ओर से विवाह को पूर्ण रूप से नशा मुक्त भी रखा गया। उल्लेखनीय है कि पादरू में राजपूत समाज के किसी भी आयोजन में अफीम-डोडा आदि मादक

पदार्थ पूर्णतया बंद है। इसी प्रकार जैसलमेर जिले के लाठी क्षेत्र के केरालिया गांव के निवासी जेठू सिंह भाटी की पुत्री नीतिका कंवर का विवाह 14 फरवरी को पाली जिले के कंटालिया गांव के निवासी ईश्वर सिंह कुंपावत के पुत्र परमवीर सिंह के साथ हुआ। विवाह के समय वर पक्ष द्वारा टीके की राशि को अस्वीकार कर दिया गया। पाली जिले में 13 फरवरी को छोटी रानी के अनोप सिंह वैरावत राठौड़ की पुत्री किरण कंवर का विवाह मेवाड़ के उमरी निवासी नारायण सिंह के पुत्र शक्ति सिंह चुण्डावत के साथ हुआ जिसमें भी वरपक्ष ने टीका लेने से मना कर दिया। 20 फरवरी को बस्तवा माताजी में मालम सिंह इंदा की पुत्री प्रकाश कंवर खिरजा निवासी जैत सिंह राठौड़ के पुत्र रिडमल सिंह के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर वधू पक्ष की ओर से 51 हजार एवं वर पक्ष की ओर से 21 हजार रुपए शिक्षा नेग के रूप में राजपूत शिक्षा कोष को भेंट किए गए। मायरा पक्ष की ओर से भी 2100 रुपए का शिक्षा नेग भेंट किया गया। उपस्थित सभी समाजबंधुओ ने इस पहल की सराहना की एवं इसे समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण बताया।

बेंगलुरु में चामुंडा माता मंदिर की वर्षगांठ एवं वार्षिकोत्सव मनाया

राजपूत समाज कर्नाटक द्वारा 7 फरवरी को बेंगलुरु में बैयरप्पा लेन स्थित चामुंडा माता मंदिर की 13वीं वर्षगांठ एवं राजपूत सभा भवन का वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। यज्ञ एवं मां चामुंडा की पूजा-अर्चना के बाद मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण किया गया। राजपूत समाज कर्नाटक के अध्यक्ष मनोहर सिंह कुंपावत ने बताया कि आज बेंगलुरु में चामुंडा माता मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा को 13 वर्ष पूर्ण हुए हैं। आप सभी के सहयोग से यह मंदिर एवं राजपूत सभा भवन बेंगलुरु में

सामाजिक गतिविधियों का केंद्र रहा है। सचिव रविंद्र सिंह परिहार ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में संस्थान के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के साथ ही अनेकों समाजबंधु मातृशक्ति सहित पारंपरिक वेशभूषा में उपस्थित रहे।

श्री राजपूत सभा ब्यावर की नवीन कार्यकारिणी का शपथग्रहण

श्री राजपूत सभा ब्यावर की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी की प्रथम बैठक 16 फरवरी को श्री करणी गार्डन में आयोजित हुई जिसमें सभा के 50 से अधिक पदाधिकारियों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। संस्थान के अध्यक्ष अजीत सिंह चाँदारुण और प्रधान संरक्षक विजेन्द्र सिंह रूपपुरा की उपस्थिति में संपन्न बैठक में चार परामर्शदाता, दो वरिष्ठ उपाध्यक्ष, पांच उपाध्यक्ष, दो मुख्य महासचिव, पांच महासचिव, एक कोषाध्यक्ष, एक सह कोषाध्यक्ष, बारह सचिव और पंद्रह संगठन मंत्रियों ने शपथ ग्रहण की। नाथु सिंह सबलपुरा सहित कई वरिष्ठ सदस्यों ने अपने विचार रखे और एकजुट होकर समाज के चहुंदिशी विकास के लिए कार्य करने की बात कही। विशेष प्रकोष्ठों में सुमन कंवर शेखावत को महिला प्रकोष्ठ, चंद्रविजय सिंह भवानीपुरा को विधि प्रकोष्ठ, कुलदीप सिंह गंठिया को शिक्षा प्रकोष्ठ, सुरेंद्र सिंह पिपाड़ा को चिकित्सा प्रकोष्ठ और रोहित सिंह नाथावत को मीडिया प्रकोष्ठ का उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया।

इंदौर में होगा सामूहिक विवाह सम्मेलन, पत्रिका का किया विमोचन

मध्य प्रदेश के इंदौर में सर्व राजपूत समाज का निःशुल्क सामूहिक विवाह सम्मेलन 20 अप्रैल को आयोजित होगा। सम्मेलन की तैयारियों के क्रम में 23 फरवरी को सम्मेलन की पत्रिका का विमोचन किया गया। पत्रिका विमोचन कार्यक्रम में संयोजक अरुण सिंह ठाकुर ने बताया कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सम्मेलन में राजपूत समाज के अनेक जोड़ों का निःशुल्क विवाह संपन्न करवाया जाएगा। इस अवसर पर अनेकों जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य व्यक्ति नवदंपतियों को आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित रहेंगे।

कांस्टेबल प्रदीप सिंह की सतर्कता से सुलझी गंभीर अपराध की गुत्थी

गुजरात में नडियाद के कांस्टेबल प्रदीप सिंह ने अपनी सतर्कता से एक गंभीर अपराध की गुत्थी सुलझाकर अपराधी को गिरफ्तार करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 7 फरवरी को आनंद एक्सप्रेस हाईवे पर एक 5 वर्षीय बालक को गंभीर घायल अवस्था में एक कार से फेंका गया था। अन्य वाहन चालकों ने बालक को अस्पताल पहुंचाया। आनंद पुलिस ने बालक के संबंध में जानकारी जुटाने के उद्देश्य से उसकी तस्वीर को सोशल मीडिया आदि माध्यमों पर प्रसारित किया। नडियाद के पुलिस कांस्टेबल प्रदीप सिंह ने जब बालक की तस्वीर देखी और घटना का विवरण जाना तब उन्हें 6 दिसंबर 2022 की एक घटना स्मरण आई जब नडियाद के निकट इसी प्रकार से एक मृत महिला और एक छोटी बच्ची को मरणासन्न स्थिति में फेंका गया था। उस बालिका और इस बालक की शक्ल में भी उन्हें समानता दिखाई दी। उन्होंने अनाथालय में पल रही बालिका की उस बालक से वीडियो कॉल पर बात करवाई तो उन दोनों ने एक दूसरे को पहचान लिया और बताया कि वे भाई बहिन हैं। इसके पश्चात प्रदीप सिंह ने एक्सप्रेसवे पर 7 फरवरी 2025 और 6 दिसंबर 2022 की तारीख का मोबाइल डाटा प्राप्त कर उसका विश्लेषण किया और उनमें से संदिग्ध नंबरों की छानबीन की। इस आधार पर आगे की जांच के बाद अपराधी उदय वर्मा, जो इन बच्चों का पिता था, उसे गिरफ्तार कर लिया गया। गंभीर अपराध की इस गुत्थी को सुलझाने में प्रदीप सिंह की सतर्कता की पुलिस विभाग के अधिकारियों के साथ आमजन द्वारा भी सराहना की गई।

आज भी प्रासंगिक हैं महाराणा प्रताप के मूल्य और नीतियां

(जयपुर में 'महाराणा प्रताप वार्षिक जियोपोलिटिकल संवाद - 2025' का आयोजन)

महाराणा प्रताप की नीति, नेतृत्व और उनका विजन आज की वैश्विक राजनीति में भी प्रासंगिक है। जिस प्रकार उन्होंने सभी वर्गों को साथ लेकर स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी, वह आज भी अनुकरणीय है। धर्मनिरपेक्षता, नारी सम्मान जैसे जीवन मूल्य जिन्हें महाराणा प्रताप ने अपने आचरण में चरितार्थ किया था वे आज भी मानव समाज में उतने ही प्रतिष्ठित हैं। भारत की रणनीतिक नीतियों में भी स्वाभिमान, आत्मनिर्भरता और दृढ़ संकल्प का महत्व आज भी उतना ही है जितना महाराणा प्रताप के समय में था। उपर्युक्त बात नाथद्वारा विधायक विश्वराज सिंह मेवाड ने 16 फरवरी को जयपुर स्थित होटल क्लार्क्स आमेर में आयोजित 'महाराणा प्रताप वार्षिक जियोपोलिटिकल संवाद - 2025' को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में सत्ता प्राप्ति के लिए जिस प्रकार से सामाजिक विघटन को बढ़ावा दिया जा रहा है, वह चिंतनीय है। हम सभी का प्रयास सामाजिक एकजुटता को बढ़ाने का होना चाहिए। सभी को साथ लेकर चलने से ही देश का सच्चा विकास हो सकता है। कार्यक्रम में केंद्रीय विदेश एवं पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री कीर्तिवर्धन सिंह ने कहा कि महाराणा प्रताप ने अपने संघर्ष में वनवासियों को भी साथ में लिया जो प्रकृति और पर्यावरण के प्रति उनके सम्मान को दशार्ता है। वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण को लेकर पूरे विश्व में चिंता व्यक्त की जा रही है, ऐसे में हम सभी को प्रकृति का सम्मान करने और उसके अनुकूल जीवन जीने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में भारत में इजरायल के राजदूत रियुवेन अजार, राजदूत अनिल त्रिगुणायत, दिल्ली के पूर्व उपराज्यपाल तेजेंद्र खन्ना, यूएसएएनएएस फाउंडेशन के सीईओ डॉ अभिनव पंड्या, सी डी सहाय एवं सेंटर फॉर नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज के सदस्यों सहित अनेको गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम में वैश्विक राजनीति, सुरक्षा, पर्यावरण, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सहित अनेक विषयों पर चर्चा की गई।

जोधपुर में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की कार्यशाला आयोजित

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के जोधपुर जिले की कार्यशाला जोधपुर शहर में बनाड़ रोड स्थित श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभागीय कार्यालय तनायन में 15-16 फरवरी को आयोजित हुई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने फाउंडेशन के उद्देश्य व कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि फाउंडेशन का कार्य श्री क्षत्रिय युवक संघ की कार्ययोजना का छोटा सा अंश है और इस अंश का उद्गम संघ है इसलिए फाउंडेशन का पहला कार्यबिंदु अपने संपर्क में आने वाले लोगों को फाउंडेशन के मूल स्रोत श्री क्षत्रिय युवक संघ की ओर मोड़ना है। जो ऐसा कर पाते हैं वे फाउंडेशन के निर्देशन में सभी तरह की नकारात्मकता का त्याग करके समाज और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करने में प्रवृत्त हों रहे हैं । कार्यशाला में बताया गया कि युवाओं की ऊर्जा को सही दिशा दर्शन देकर उसे सृजनात्मक स्वरूप में ढालना आवश्यक है अन्यथा यह ऊर्जा विध्वंस की ओर भी मुड़ सकती है। युवाओं की इस ऊर्जा के सकारात्मक संयोजन के उद्देश्य से ही फाउंडेशन बैठकें, सभाएं, कार्यशालाएं, संगोष्ठी, सामूहिक भ्रमण जैसे कार्यक्रमों का आयोजन करता है। हमें संघ से परिचित होने के लिए इसकी मुख्य गतिविधि शाखा एवं शिविर में सक्रिय रूप से भाग लेना आवश्यक है तभी हम पूज्य तनसिंह जी के दर्शन को अपने जीवन में उतार सकेंगे। संघ साहित्य को नियमित रूप से पढ़ने से भी सक्रिय रहने की प्रेरणा बनी रहती है। कार्यशाला में सभी प्रतिभागियों द्वारा जोधपुर जिले में फाउंडेशन के कार्य को गति देने पर चर्चा की गई एवं इसके लिए कार्ययोजना तैयार की गई। कार्यक्रम में संघ के बिलाड़ा-भोपालगढ़ प्रांत प्रमुख चैन सिंह साथीन, जोधपुर प्रांत प्रमुख भरत पाल सिंह दासपां, तेज सिंह सोवनिया, बन्ने सिंह पीलवा, रघुवीर सिंह बालरवा, आईदान सिंह मालूंगा, रामप्रताप सिंह पाल, तेज सिंह बेगड़िया, नरेंद्र सिंह पीपाड़ सहित अनेकों सहयोगी उपस्थित रहे।

जयपुर संभाग की मासिक बैठक आयोजित

श्री क्षत्रिय युवक संघ के जयपुर संभाग की मासिक बैठक जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय संघ शक्ति में 22 फरवरी को आयोजित हुई जिसमें संभाग में होने वाली सांघिक गतिविधियों की समीक्षा कर आगामी कार्ययोजना बनाई गई। बैठक में सम्भाग प्रमुख राम सिंह अकदडा ने सहयोगियों के साथ आगामी ग्रीष्मकालीन उच्च प्रशिक्षण शिविर के लिए संभाग के पात्र स्वयंसेवकों से संपर्क करने के संबंध में चर्चा की। संभाग में संघ शक्ति व पथ प्रेरक की सदस्यता बढ़ाने पर भी चिंतन हुआ एवं इस हेतु शंकर सिंह खानपुर के निर्देशन में क्षेत्रवार दल बनाए गए। सभा में केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह आऊ, संघ शक्ति के संपादक राजेन्द्र सिंह बोबासर व प्रांत प्रमुख श्याम सिंह चिरनोटिया भी उपस्थित रहे।

आऊ और सेखाला में फाउंडेशन की कार्यविस्तार बैठकें

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की रात्रिकालीन कार्यशाला 23 फरवरी को जोधपुर जिले के आऊ में स्थित राजपूत सभा भवन में आयोजित हुई। कार्यशाला में फाउंडेशन के जोधपुर जिले में कार्यविस्तार को लेकर चर्चा की गई जिसमें सभी प्रतिभागियों ने अपने विचार रखे और आगामी गतिविधियों की रूपरेखा तैयार की। 23 फरवरी को ही जोधपुर जिले के सेखाला गांव में स्थित जवाहर नगर में भी फाउंडेशन की एक कार्यविस्तार बैठक आयोजित हुई। दोनों बैठकों में श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने संघ और फाउंडेशन के उद्देश्य व कार्यप्रणाली के बारे में बताया और कहा कि फाउंडेशन समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने में हमारे दायित्व का बोध कराने का कार्य कर रहा है। हम समाज के लिए किस भूमिका में उपयोगी हो सकते हैं इस पर हमें चिंतन करना है और उस भूमिका को तय करने के बाद समाज की आवश्यकता को पूरा करने में सहयोगी बनना है। उन्होंने बताया कि सामूहिक रूप से किया जाने वाला कठिन कार्य भी सरल बन जाता है इसलिए हमें एक टीम के रूप में कार्य करते हुए फाउंडेशन के माध्यम से समाज के युवाओं की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में मोड़ना है। इसके लिए आवश्यक है कि हम स्वयं भी संघ के निरंतर संपर्क में रहकर अपने आपको ऊर्जान्वित बनाए रखें क्योंकि संघ हमारे विचारों को हमारे वर्तमान दायित्व बोध के अनुरूप बनाकर उन विचारों के अनुकूल आचरण करने का अभ्यास करवाता है। आज हमारे समाज के लोगों के विचारों में जो जड़ता आ गई है, संघ उस जड़ता को अपनी विचार क्रांति द्वारा दूर करता है एवं तदुपरांत उन नवीन विचारों के अनुसार हमारे आचरण को बनाने के लिए उपयुक्त प्रणाली में से गुजारता है क्यों कि यदि विचार श्रेष्ठ हों लेकिन तदनुसार आचरण नहीं हो तो वे विचार केवल मस्तिष्क का व्यायाम बनकर रह जाते हैं, उनसे कुछ घटित नहीं होता।

इन बैठकों में संघ के बिलाड़ा-भोपालगढ़ प्रांत प्रमुख चैन सिंह साथीन, फलोदी प्रांत प्रमुख भवानी सिंह पीलवा, फाउंडेशन के जैसलमेर जिला प्रभारी कमल सिंह भैंसड़ा, गजेंद्र सिंह देणोक, वीरेंद्र सिंह बलरिया, कमल सिंह आऊ, गोविंद सिंह आऊ, गोरख सिंह बापिणी, वीरेन्द्रप्रताप सिंह नींबो का तालाब, भोमसिंह नींबो का तालाब, हनवंतसिंह जाखण, पदम सिंह सेखाला, सुरेंद्र सिंह तेना, उत्तम सिंह नाहर सिंह नगर, देवी सिंह बामनू, अनोप सिंह सेखाला, तेज सिंह सोवनिया सहित अनेकों प्रतिभागी शामिल रहे। आऊ में हिम्मत सिंह जी आऊ तथा मनोहर सिंह जी आऊ आदि वरिष्ठ जनों का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

संपादकीय

परजीविता और सहजीविता

परजीविता (Parasitism) और सहजीविता (Symbiosis) जीव विज्ञान की अवधारणाएं हैं जिसमें दो जीवों के बीच के संबंध को परिभाषित किया जाता है। इनकी सरल परिभाषा यह है कि परजीविता में एक जीव दूसरे जीव पर निर्भर रहता है और उससे लाभ उठाता है भले ही इस प्रक्रिया में दूसरे जीव को हानि पहुंच रही हो, वहीं सहजीविता में भी दो जीव एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं परंतु इस संबंध से दोनों को लाभ होता है और दोनों एक दूसरे की आवश्यकताएं पूरी करते हैं। परजीविता की धारणा हाल ही में चर्चा का विषय बनी जब 12 फरवरी को भारत के उच्चतम न्यायालय ने शहरों में बेघर लोगों के आश्रय के अधिकार से संबंधित एक याचिका पर सुनवाई करते हुए चुनावों के समय राजनीतिक दलों द्वारा 'फ्रीबीज' अर्थात् मुफ्त सुविधाओं या धनराशि की योजनाओं की घोषणा के संबंध में टिप्पणी करते हुए कहा कि - 'फ्रीबीज के कारण देश में एक ऐसा परजीवी वर्ग तैयार हो रहा है जो देश की कार्यशक्ति में शामिल होकर राष्ट्रीय विकास में अपनी भूमिका निभाने की बजाय मुफ्तखोरी का शिकार होकर नाकारा बन रहा है।' राष्ट्रीय विकास, मुफ्तखोरी और परजीविता को लेकर उच्चतम न्यायालय की यह टिप्पणी महत्वपूर्ण और चिंतन करने योग्य है। न्यायालय द्वारा ही नहीं बल्कि अनेक विचारकों, समाजविज्ञानियों, अर्थशास्त्रियों, उद्यमियों आदि के द्वारा भी चुनावी हित साधने के लिए फ्रीबीज अर्थात रेवड़ी संस्कृति को बढ़ावा देने पर चिंता जताई जाती रही है क्योंकि यह राष्ट्र के एक बड़े समूह को श्रमशक्ति का अंग बनने से रोकती है, उसे निष्क्रिय बनाती है। कृषि के क्षेत्र में तो यह समस्या अधिकाधिक बढ़ती जा रही है क्योंकि मुफ्तखोरी की बढ़ती आदत के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्य हेतु श्रमिकों की भारी कमी होने लगी है। जिस देश में 80 करोड़ से अधिक जनसंख्या आज भी परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से कृषि पर निर्भर हो, उस देश के लिए यह चिंता का विषय होना ही चाहिए। लेकिन जिन राजनीतिक दलों एवं राजनेताओं के लिए सत्ता ही एकमात्र साध्य बन चुकी है उनके लिए चिंता का विषय मात्र एक ही है कि वे किस प्रकार से सत्ता में आएं और वहां बने रहें, चाहे इसके लिए उन्हें राष्ट्र के लिए दुष्परिणामकारी नीतियां ही क्यों न अपनानी पड़े। इसीलिए प्रत्येक चुनाव के साथ रेवड़ी बांटने की यह संस्कृति बढ़ती जा रही है और परिणाम स्वरूप माननीय उच्चतम न्यायालय की उपरोक्त टिप्पणी के अनुसार देश में एक बड़ा परजीवी वर्ग तैयार होता जा रहा है जो देश के संसाधनों के साथ ही परिश्रम और ईमानदारी से जीविकोपार्जन करने वाले नागरिकों पर भी अप्रत्यक्ष रूप से बोझ बन रहा है।

परजीविता अर्थात् अन्यों के आश्रय पर जीवित रहने की प्रवृत्ति किसी भी व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र का आदर्श नहीं बन सकती। स्वावलंबन ही किसी व्यक्ति की उन्नति का आधार बन सकता है और किसी समाज अथवा राष्ट्र को भी स्वावलंबी बनाकर ही विकास के पथ पर अग्रसर किया जा सकता है। परजीविता किसी भी व्यक्ति और समाज के स्वाभिमान को नष्ट कर देती है, उसके परिश्रम और संघर्ष की क्षमता को समाप्त कर देती है और उसमें आत्महीनता की भावना को जन्म देकर उसे नकारात्मकता के दुष्चक्र में धकेल देती है। जिन नीति निमार्ताओं को ऐसी परजीविता की प्रवृत्ति को समाप्त करने हेतु नीतियों का निर्माण करना चाहिए, विडंबना है कि वे ही इसे प्रोत्साहित करने का कार्य कर रहे हैं। यहां यह भी समझना आवश्यक है कि परजीविता की इस भावना को बढ़ाने में केवल चुनावी रेवड़ी के रूप में मिलने वाली मुफ्त सुविधाएं या राशि आदि ही एकमात्र कारक नहीं है बल्कि जातिगत आरक्षण की अव्यावहारिक व्यवस्था, इतिहास और महापुरुषों की पहचान को बदलना, धर्म अथवा पंथ के नाम पर भय और घृणा को प्रसारित करना आदि भी परजीविता की भावना को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं।

निश्चित रूप से यह सत्य है कि किसी भी परिवार, समाज तथा राष्ट्र में यदि उसका कोई सदस्य या अंश किसी रूप में कमजोर है, असमर्थ है, अक्षम है तो जो सबल, समर्थ और सक्षम हैं, उन्हें उनका भार उठाना चाहिए, उनका हरसंभव सहयोग करना चाहिए। किंतु इसका उपाय परजीविता से नहीं सहजीविता अर्थात् एक दूसरे का सहयोगी होकर जीने की भावना से निकलता है। सहजीविता कौटुंबीय भाव का व्यावहारिक प्रकटीकरण है और कुटुंब में प्रेम, कृतज्ञता और सम्मान के आधार पर आपसी सहयोग खड़ा होता है न कि निर्बलता अथवा सबलता को आधार बनाकर उपलब्ध संसाधनों पर अपने अधिकार की घोषणा की जाती है। भारतीय जीवन वास्तव में इसी सहजीविता के आधार पर विकसित हुआ था और इसीलिए इसमें सभी जाति, पंथ, संप्रदाय, वर्ग आदि बिना किसी अन्य पर आश्रित हुए एक दूसरे के सहयोगी होकर एक वृहद भारतीय परिवार के निर्माण में अपनी भूमिका निभाते रहे थे। यह दुखद है कि वर्तमान में भारतीय जीवन की सहजीविता की उक्त विशेषता को पुष्ट करने की अपेक्षा संकुचित राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए राजनेताओं द्वारा परजीविता की घातक प्रवृत्ति को प्रोत्साहित किया जा रहा है। परजीविता कि यह प्रवृत्ति राष्ट्र के लिए तो घातक है ही, परजीविता को धारण करने वाले वर्ग के लिए और भी अधिक घातक है क्योंकि अंततः परजीविता का परिणाम दोनों पक्षों के संघर्ष के रूप में ही सामने आएगा क्योंकि शोषण की नीति दीर्घकाल तक नहीं चलती और अनिवार्य रूप से संघर्ष की जन्मदाता बनती है। उस परिस्थिति में परजीविता के कारण संघर्षक्षमता से रहित हो चुके वर्ग की पराजय अवश्यंभावी है। इसलिए यह केवल नीति-निमार्ताओं का ही दायित्व नहीं है कि वे परजीविता को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों को न अपनाएं बल्कि राष्ट्र रूपी परिवार के सदस्य के रूप में सभी का यह दायित्व है कि वे अल्पकालीन लाभ के लिए परजीविता की इस वृत्ति को स्वीकार न करें, बल्कि स्वावलंबन और परिश्रम के आदर्श को अपनाकर स्वयं को सबल, समर्थ और सक्षम बनाने की ओर अग्रसर हों। ऐसा होने पर ही भारतीय जीवन में सहजीविता पुनः साकार हो सकेगी।

तालेड़ी में सामूहिक यज्ञ व विशेष शाखा का आयोजन

चित्तौड़गढ़ प्रांत में सामूहिक यज्ञ व विशेष शाखा के आयोजन के क्रम में 16 फरवरी को तालेड़ी गांव में रावला परिसर में कार्यक्रम रखा गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के

केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली के निर्देशन में सामूहिक हवन के पश्चात सभी ने एक दूसरे का परिचय प्राप्त किया। तत्पश्चात उपस्थित समाजबंधुओं को संघ के उद्देश्य व कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से बताया गया एवं शिविर, शाखा, संघ साहित्य, संघशक्ति, पथ प्रेरक आदि के बारे में जानकारी दी गई। केसरिया पताकाओं तथा संघ साहित्य का वितरण भी किया गया। इस अवसर पर दिलीप सिंह रूद, अजय पाल सिंह चरपोटिया, सूर्य करण सिंह आकोलागढ़, जीवन सिंह नरधारी, नरेंद्र सिंह लाखां का खेड़ा, शिवराज सिंह नेतावल गढ़पाछली, अमर सिंह बनवाड़ा, त्रिभुवन सिंह बलौदा, भटवाड़ा से कालू सिंह, गोपाल सिंह, तालेड़ी से सूर्यपाल सिंह, गोविंद सिंह, अर्जुन सिंह,अमर सिंह, निरंजन सिंह सहित अनेकों समाजबंधु मातृशक्ति सहित उपस्थित रहे। 23 फरवरी को चित्तौड़गढ़ में जिंक कॉलोनी के सामने नागेश्वर महादेव मंदिर के निकट करणी विहार में स्थित श्रवण सिंह धूल खेड़ा के आवास परिसर में विशेष शाखा एवं सामूहिक यज्ञ का आयोजन हुआ। इस अवसर पर लक्ष्मण सिंह भाटियों का खेड़ा, अजय पाल सिंह चरपोटिया, धूल खेड़ा से श्रवण सिंह, प्रताप सिंह, राम सिंह, लाखां का खेड़ा से नरेंद्र सिंह, आदित्य सिंह, कृष्ण पाल सिंह सहित अनेकों समाज बंधु उपस्थित रहे।

समाज के अभ्यर्थियों का कोचिंग व्यय वहन करेगा राजपूत शिक्षा कोष

राजपूत समाज के प्रतिभावान किंतु आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों के सहयोग के लिए कार्यरत राजपूत शिक्षा कोष की बैठक 22 फरवरी को जोधपुर स्थित मारवाड़ राजपूत सभा भवन में आयोजित हुई। पूर्व सांसद नारायण सिंह माणकलाव की उपस्थिति में संपन्न बैठक में निर्णय लिया गया कि हाल ही में घोषित राजस्थान प्रशासनिक सेवा (आरएएस) प्री परीक्षा के परिणामों में सफल हुए राजपूत समाज के वे अभ्यर्थी थी जो ईडब्ल्यूएस में आते हैं, उनकी मुख्य परीक्षा की कोचिंग का पूरा व्यय राजपूत शिक्षा कोष द्वारा वहन किया जाएगा। राजपूत शिक्षा कोष के सचिव श्याम सिंह सजाड़ा ने बताया कि पात्र व्यक्ति अपना आवेदन राजपूत शिक्षा कोष के कार्यालय में जमा करवा सकते हैं जिनका भौतिक सत्यापन करने के बाद अभ्यर्थी को उसकी सुविधा अनुसार स्वयं द्वारा चयनित कोचिंग संस्थान में तैयारी का अवसर मिलेगा जिसका शुल्क संस्था द्वारा वहन किया जाएगा। बैठक में महाराजा गज सिंह शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष गोपाल सिंह भलासरिया, सुरेन्द्र सिंह केतु, राजपूत शिक्षा कोष के उपाध्यक्ष विशन सिंह सोढा, कोषाध्यक्ष मोहन सिंह खींची, जेठु सिंह विरमदेवरा, श्रवण सिंह जोधा, रवि प्रकाश सिंह सहित कई शिक्षाविद व समाजबंधु उपस्थित रहे।

अलवर में राजपूत समाज का सामूहिक विवाह सम्मेलन

अलवर जिले के रामगढ़ उपखंड के अलावलपुर गांव में स्थित श्री बाबा नत्थूराम मंदिर परिसर में 16 फरवरी को राजपूत समाज का सामूहिक विवाह सम्मेलन राजपूत समाज सेवा समिति अलवर के तत्वावधान में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में 27 नवदंपति विवाह बंधन में बंधे। रामगढ़ विधायक सुखवंत सिंह कार्यक्रम में उपस्थित रहे एवं इस आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि यह आयोजन समाज के लिए एक सकारात्मक संदेश है। ऐसे आयोजनों से दहेज, टीका, नशा जैसी कुप्रथाएं समाप्त होंगी। अन्य समाजों को भी इस से प्रेरणा

लेकर ऐसी पहल करनी चाहिए। राजपूत समाज सेवा समिति अलवर के अध्यक्ष अमरजीत सिंह ने बताया कि समिति का मुख्य उद्देश्य समाज में फैली कुरीतियों को समाप्त करना है। वर्तमान में पढ़े-लिखे एवं संपन्न परिवार भी कुरीतियों एवं दिखावे से दूर रहकर सामूहिक विवाह सम्मेलन के माध्यम से सादगीपूर्ण विवाह को प्राथमिकता दे रहे हैं, यह हर्ष का विषय है।

सरमथुरा (धौलपुर) में राजपूत समाज की बैठक

धौलपुर जिले के सरमथुरा कस्बे में स्थित रावर पैलेस में धौलपुर राजपूत समाज की एक बैठक 20 फरवरी को आयोजित हुई जिसमें पूर्व राजपरिवार के सदस्य हेमेंद्र सिंह व सुरेन्द्र सिंह ने राजपूत समाज के जिला उपाध्यक्ष नरोत्तम सिंह परमार व अन्य सदस्यों से विभिन्न विषयों पर चर्चा की। बैठक में शिक्षा के विषय पर चर्चा में बताया गया कि राजपूत समाज में शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ रहे पिछड़ेपन की समस्या के समाधान के लिए जिले में 'शिक्षा मिशन' चलाया जा रहा है। इसके तहत शिक्षा से वंचित लोगों का डेटा तैयार किया गया है। इस डेटा का प्रयोग करके समाज के वंचित छात्र-छात्राओं को शिक्षा उपलब्ध कराने के उपाय किए जाएंगे। समाज में फैली कुरीतियों जैसे नशा, दहेज, मृत्यु भोज आदि पर भी चर्चा हुई। बैठक में आगामी होली मिलन समारोह की तैयारियों पर भी चर्चा की गई।

जीतू कंवर भाटी ने जीते दो रजत पदक

जोधपुर जिले की बालेसर तहसील के खुड़ियाला गांव की निवासी एवं वर्तमान में जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में अध्ययनरत जीतू कंवर भाटी ने 23वीं नेशनल पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप में दो रजत पदक जीते हैं। जीतू ने ये पदक चेन्नई में 17 से 20 फरवरी तक आयोजित प्रतियोगिता के 100 मीटर महिला वर्ग टी-35 कैटिगरी एवं शॉट पुट महिला वर्ग एफ-35 कैटेगरी में जीते। सेरेब्रल पाल्सी रोग से ग्रसित जीतू कंवर इससे पूर्व राष्ट्रीय पैरा एथलीट खेलों में पांच स्वर्ण पदक भी जीत चुकी है।

नौका अभियान में कीर्तिमान बनाने वाले दिग्विजय सिंह सम्मानित

राष्ट्रीय कैडेट कोर के विशेष नौका अभियान आरडीसी-25 में खेरवाड़ा जिले के छैला गांव के निवासी दिग्विजय सिंह ने कानपुर से कोलकाता तक 1720 किलोमीटर की दूरी तय कर नया कीर्तिमान बनाया। राष्ट्रीय कैडेट कोर नेवल विंग द्वारा प्रति वर्ष यह प्रतियोगिता आयोजित की जाती है जिसमें 17 निदेशालय के कैडेट भाग लेते हैं। दिग्विजय सिंह को उनकी इस उपलब्धि के लिए 22 फरवरी को महाराणा भूपाल नोबल्स विद्या प्रचारिणी सभा उदयपुर के तत्वावधान में आयोजित प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम में सम्मानित किया गया।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि (बालिका)	01.04.2025 से 04.04.2025 तक	**स्थान मार्ग आदि** - मां चंद्रिका महिला महाविद्यालय, छतरपुर रोड, महोबा (उत्तर प्रदेश)।
02.	प्रा.प्र.शि	01.04.2025 से 04.04.2025 तक	**स्थान मार्ग आदि** -चौधरी पहलवान सिंह इंटर कॉलेज, ग्राम - इचौली, जिला - हमीरपुर (उत्तर प्रदेश)।

गजेन्द्र सिंह आऊ, शिविर कार्यालय प्रमुख

मुंबई में श्री क्षत्रिय युवक संघ

शौर्य, सेवा, संगठन का, है ये अनुपम संग।
युवा हृदय में ज्योति जलाए, श्री क्षत्रिय युवक संघ।।

मुंबई नगरी में संघ की शान, हर कोने से आते शाखा काज।
गिरगांव चौपाटी की रेत पर, नित लगती शाखा तनेराज।।

नरीमन पॉइंट से गूंजे, शौर्य और तेज की वाणी।
लगती वीर शिवाजी शाखा, संस्कारों की अमिट कहानी।।

दादर, बांद्रा, मलाड़, अंधेरी, तुर्भे, बोरीवली, भायंदर।
खारघर, कल्याण, भिवंडी हर कोने में संघ का घर।।

संघ न केवल संगठन है, बल्कि है चरित्र का दीप।
हर पीढ़ी को राह दिखाए, शौर्य, सेवा और शील।।

देवेंद्रसिंह विरोल (सांचौर), हाल मुंबई

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

BNB
ॐ
श्री योगेश्वर छात्रावास
कुचामन सिटी
विशेषताएं
1. कक्षा 6 से 12 वीं तक के विद्यार्थियों हेतु सीमित स्थान ।
2. अनुशासित एवं नियमित दिनचर्या ।
3. शुद्ध, पौष्टिक एवं सात्विक आहार ।
4. सभी प्रमुख शिक्षण संस्थाओं के समीप स्थित ।
5. स्वाध्याय हेतु निःशुल्क लाईब्रेरी सुविधा ।
जिम्मेदारी हमारी विश्वास आपका
संम्पर्क सूत्र :
9772097087, 9799995005, 8769190974
SBI बैंक के पास, डीडवाना रोड़, कुचामन सिटी

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

ऊर्जा का अपव्यय धरती और हम सबके लिए हानिकारक

हर कोई जानता है कि पृथ्वी पर ग्लोबल वार्मिंग दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है और वातावरण में अपने विभिन्न प्रकार के हानिकारक परिणाम छोड़ रही है। ग्लोबल वार्मिंग के पर्यावरण पर बहुत घातक प्रभाव हैं जैसे अत्यधिक वर्षा, अत्यधिक गर्मी के दिन (शुष्क मौसम), बाढ़, भूस्खलन, कैंसर पैदा करने वाली पराबैंगनी किरणें आदि। यह समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि लोगों को ऊर्जा के संरक्षण के बारे में जागरूक होना चाहिए और इसी से यह भी निश्चित हो सकेगा कि भविष्य की पीढ़ियाँ सुरक्षित कैसे रह सकेंगी।

ऊर्जा एक ऐसा शब्द है जो अपने आप में किसी भी पहलू में अच्छा प्रदर्शन करने की क्षमता को परिभाषित करता है। यह कई रूपों में हो सकता है जैसे विद्युत ऊर्जा, ऊष्मा ऊर्जा, हाइड्रोलिक ऊर्जा, प्रकाश ऊर्जा और कई अन्य। इन सभी ऊर्जाओं का उपयोग किया जाता है और उन्हें अन्य विभिन्न रूपों में भी परिवर्तित किया जाता है ताकि वे बिजली पैदा कर सकें और विभिन्न कार्य करने में उपयोगी हो सके। हमारे जीवन में कई जगहें हैं जहाँ हम ऊर्जा का उपयोग करते हैं, उदाहरण के लिए खाना बनाते समय, टीवी देखते समय, संगीत बजाते समय या स्ट्रीट लाइट के रूप में।

ऊर्जा की खपत हर जगह होती है। इसलिए यह सिद्ध होता है कि हम इसके बिना जीवित नहीं रह सकते। लेकिन कोई भी इस बात पर ध्यान नहीं देता कि इतनी ऊर्जा का उपयोग करने के बाद हमें क्या परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। इससे निश्चित रूप से पर्यावरण की स्थिति, देश की वित्तीय स्थिति को नुकसान पहुँचता है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अनेक प्राणियों का प्राकृतिक जीवन छिन जाता है। हर व्यक्ति के जीवन में कई बदलाव किए जा सकते हैं ताकि ऊर्जा को संरक्षित किया जा सके। क्योंकि यह हर किसी के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। ऊर्जा संरक्षण के लिए कई छोटे-छोटे उपाय किए जा सकते हैं, जैसे हमें अपने कपड़ों को वॉशिंग मशीन में और ज्यादातर ठंडे पानी में धोना चाहिए और ऊर्जा बचाने के लिए अन्य अलग-अलग तकनीक का इस्तेमाल करना चाहिए। घर में मौजूद सभी इलेक्ट्रॉनिक मशीनों का उपयोग भी समझदारी से करना चाहिए। सभी को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे कम से कम एयर कंडीशनर का उपयोग करें और अपने इलाके के आसपास अधिक से अधिक पेड़ लगाएं ताकि उन्हें प्राकृतिक और ताजा हवा मिल सके। लोगों को अपने घरों में रिसाइकिल होने वाली वस्तुओं का इस्तेमाल करना चाहिए, उदाहरण के लिए डिब्बे, प्लास्टिक की बोतलें और अखबार। इनसे बहुत ज्यादा ऊर्जा बचती है और ये नए उत्पाद बनाने में भी मदद करते हैं।

ऊर्जा की बचत कार्बन उत्सर्जन को कम करने में मदद कर सकती है, जिससे पृथ्वी एक स्वच्छ ग्रह बन सकती है, जो सभी के लिए आवश्यक है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप ऊर्जा का समझदारी और विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग कर रहे हैं, कुछ रोजमर्रा की तरकीबें सीखना त्वरित और आसान है। ऊर्जा का संरक्षण करना सीखने का कोई वास्तविक नुकसान नहीं है। आप पर्यावरण की मदद करते हैं और कम ऊर्जा खपत से खर्च भी कम होता है। ऊर्जा का संरक्षण बहुत महत्वपूर्ण है, और समय की मांग है क्योंकि उद्योगों के विकास में वृद्धि हुई है, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये उद्योग अपने द्वारा उत्पादित सभी हानिकारक कचरे का ध्यान नहीं रखते हैं। इससे पर्यावरण और जलवायु परिस्थितियों को बहुत नुकसान पहुंचा है और हम बदतर जीवन जी रहे हैं। बढ़ते प्रदूषण के कारण जलवायु स्थिति में बदलाव का एक बहुत ही सामान्य उदाहरण ओजोन परत का असामान्य क्षरण है, जो हानिकारक पराबैंगनी किरणों के कारण त्वचा कैंसर का कारण बनता है। ऊर्जा संरक्षण नियम बताता है कि ऊर्जा को न तो बनाया जा सकता है, और न ही नष्ट किया जा सकता है। यह केवल एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित हो सकती है। यह दर्शाता है कि ऊर्जा पूरे सिस्टम में एक समान रहेगी जब तक कि बाहर से कुछ अतिरिक्त ऊर्जा न जोड़ी जाए। ऊर्जा संरक्षण के लिए साधारण और आवश्यक उपाय इस तरह कर सकते हैं कि कमरे से बाहर निकलते समय लाइट बंद कर देना, जब उपकरण उपयोग में न हों तो उन्हें बंद कर देना और गाड़ी चलाने के बजाय पैदल चलना, ये सभी ऊर्जा संरक्षण के उदाहरण हैं। लोगों द्वारा ऊर्जा संरक्षण के दो मुख्य स्वरूप हैं अपने ऊर्जा बिल पर अधिक नियंत्रण प्राप्त करना और पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों की मांग को कम करना। हम ऊर्जा की खपत को कम करके, हानिकारक ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा को कम करके सकारात्मक योगदान दे सकते हैं। ऊर्जा की बचत का मतलब पैसे की बचत भी है। हम ऊर्जा की खपत को कम करके, अपने ऊर्जा बिलों के लिए भुगतान की जाने वाली राशि को भी कम कर सकते हैं। हमारे पास बदलाव लाने की शक्ति है। ऊर्जा संसाधनों के प्रयोग के विकल्प विकसित किए जाने चाहिए। हम सभी को यह जानना अति आवश्यक है कि ऊर्जा की बचत ही ऊर्जा का उत्पादन है। अतः जहाँ तक संभव हो सके ऊर्जा की बचत की जानी चाहिए वहीं गैर-परंपरागत ऊर्जा के साधनों के प्रयोग को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। इससे ग्लोबल वार्मिंग को कम करने में मदद मिलती है। पर्यावरण प्रदूषण कम होता है। जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम होती है। इससे अर्थव्यवस्था भी मजबूत होती है। भविष्य की पीढ़ियों के लिए नवीकरणीय ऊर्जा को बनाए रखने में मदद मिलती है। ऊर्जा स्वतंत्रता बढ़ती है। ऊर्जा दक्षता में सुधार होता है और ऊर्जा साक्षरता भी बढ़ती है।

- सुरेश सिंह बैस 'शाश्वत'

महाराजा रणवीर सिंह को राज्याभिषेक दिवस पर किया स्मरण

श्री अमर क्षत्रिय राजपूत सभा आरएस पुरा के तत्वावधान में 20 फरवरी को जम्मू के आरएस पुरा (रणवीर सिंह पुरा) में महाराजा रणवीर सिंह के राज्याभिषेक दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्था के

प्रधान विशंभर सिंह (पूर्व सूबेदार मेजर) ने कहा कि 20 फरवरी 1856 को महाराजा रणवीर सिंह जी का राज्याभिषेक हुआ था। उन्होंने ही आरएस पुरा कस्बा बसाया था जिसका नामकरण उनके नाम पर ही किया गया है। महाराजा ने समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने में भी योगदान दिया और अपने कार्यकाल में रणवीर नहर का निर्माण भी करवाया जिससे आज भी क्षेत्र के किसानों को नहरी पानी मिल रहा है। महाराजा रणवीर सिंह ने आरएस पुरा कस्बे के साथ-साथ सीमावर्ती क्षेत्रों में भी अनेक भव्य मंदिरों का निर्माण करवाया। स्थानीय विधायक डॉ. नरेंद्र सिंह रैणा ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि महाराजा रणवीर सिंह कुशल प्रशासक थे जिन्होंने अपनी प्रजा के हित को प्राथमिकता देकर शासन किया। उन्होंने जम्मू कश्मीर रियासत में रणवीर दंड संहिता भी लागू की थी। सुचेतगढ़ विधायक प्रोफेसर गारु राम भगत ने कहा कि हमारी युवा पीढ़ी को ऐसे महान लोगों से प्रेरणा लेकर देश और समाज के विकास में अपना योगदान देना चाहिए। सभा के चेयरमैन बृजेश्वर सिंह राणा, एसडीपीओ निखिल गोगना सहित विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि व स्थानीय समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे और महाराजा रणवीर सिंह की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

नरोला और गांधीधाम में सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन

मेहसाणा जिले की कड़ी तहसील के नरोला गांव में चावड़ा-दभी-राठौड़ राजपूत समुदाय का तीसवां सामूहिक विवाह समारोह 23 फरवरी को आयोजित किया गया। कार्यक्रम में गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल भी शामिल हुए और नवदंपतियों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि जब इस प्रकार का शुभ अवसर सामाजिक उत्सव बन जाता है तो यह समाज में एकता के भाव को मजबूत करता है। सामूहिक विवाह आधुनिक समय की मांग है जिसे स्वीकार कर राजपूत समाज ने प्रगतिशीलता का परिचय दिया है। उन्होंने कहा कि राजपूत समुदाय की एकता और शक्ति राज्य और राष्ट्र की प्रगति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली होगी। हम सभी को मिलकर भारत को विकसित और शक्तिशाली बनाना है। कार्यक्रम में रखियाल विधायक दिनेश सिंह कुशवाहा, सामाजिक कार्यकर्ता जयराज सिंह परमार, बलवंत सिंह डाभी, कृपाल सिंह चावड़ा, पूर्व विधायक कानू सिंह डाभी, अश्विन सिंह चावड़ा, दिलीप सिंह डाभी, भूपेंद्र सिंह चावड़ा सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। श्री कच्छ राजपूत क्षत्रिय सभा का बारहवां सामूहिक विवाह महोत्सव कच्छ जिला राजपूत क्षत्रिय सभा के अध्यक्ष एवं रापर विधानसभा के विधायक वीरेंद्रसिंह जाडेजा की अध्यक्षता में गांधीधाम में 23 फरवरी को आयोजित हुआ। इस सम्मेलन में 74 नवविवाहित जोड़ों ने दाम्पत्य जीवन में प्रवेश किया। इस अवसर पर वांकानेर महाराजा एवं राज्यसभा सांसद केसरीदेवसिंह झाला, पूर्व कैबिनेट मंत्री भूपेंद्रसिंह चुडासमा, प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष महेंद्रसिंहजी सरवैया, वाघोडिया विधानसभा के विधायक धर्मेंद्रसिंह वाघेला, अबडासा विधानसभा के विधायक प्रद्युम्नसिंह जडेजा, कच्छ जिला पंचायत के अध्यक्ष जनकसिंह जडेजा, सामूहिक विवाह समिति के अध्यक्ष जयदीपसिंह जडेजा, कच्छ जिला राजपूत क्षत्रिय महिला सभा की अध्यक्षा चेतनाबा जडेजा सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

(पृष्ठ एक का शेष)

महाराणा...

इसलिए पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करने की बजाय अपनी संस्कृति का सम्मान करें। विद्या प्रचारिणी सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष प्रोफेसर शिव सिंह सारंगदेवोत ने महाराणा भूपाल सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस प्रकार उन्होंने मेवाड़ के शहरी ही नहीं बल्कि आदिवासी क्षेत्रों में भी शिक्षा की अलख जगाई। उन्होंने लोकहित में अनेक कार्य किए एवं भूमि दान की जहां पर वर्तमान में महाराणा भूपाल चिकित्सालय, न्यायालय परिसर, कलेक्ट्री परिसर, फतेह मेमोरियल और अनेक विद्यालय व महाविद्यालय संचालित हैं। ऐसे लोकप्रिय, प्रजा के हितचिंतक एवं दूरदर्शी व्यक्तित्व के प्रति हम सभी को कृतज्ञ होना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित अतिथियों द्वारा प्रबंध संकाय की वार्षिक पत्रिका 'माइल स्टोन' का विमोचन भी किया गया। समारोह में संस्थान की विभिन्न इकाईयों के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं एवं नई दिल्ली में हुई गणतंत्र दिवस परेड व अन्य कार्यक्रमों में संस्था का प्रतिनिधित्व करने वाले एनसीसी कैडेट्स को सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम में विद्या प्रचारिणी सभा के उपाध्यक्ष डॉ दरियाव सिंह चुंडावत, भूपाल नोबल्स संस्थान के प्रबंध निदेशक मोहब्बत सिंह राठौड़, संस्था के अन्य पदाधिकारी, संकाय सदस्य, अभिभावक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। संस्थान के मंत्री डॉ महेंद्र सिंह राठौड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ अनीता राठौड़ ने किया।

24 फरवरी को ही महाराणा भूपाल सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में उदयपुर स्थित राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति सचिवालय सभागार में भी संगोष्ठी और पुष्पांजलि सभा का आयोजन किया गया। कुलाधिपति भंवरलाल गुर्जर ने महाराणा को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि विद्यापीठ के संस्थापक जनूभाई भी महाराणा भूपाल सिंह की प्रेरणा से ही शिक्षण हेतु बनारस गए एवं वापिस लौटकर 1937 में वंचित वर्ग को शिक्षा से जोड़ने के उद्देश्य से विद्यापीठ की स्थापना की। कार्यक्रम में पानी वाले बाबा के नाम से प्रसिद्ध डॉ राजेंद्र सिंह, कुलपति प्रोफेसर एसएस सारंगदेवोत, रजिस्ट्रार डॉ तरुण श्रीमाली, डॉ युवराज सिंह राठौड़ सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे एवं महाराणा की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित करके उन्हें नमन किया। लोक जनसेवा संस्थान द्वारा पांच दिवसीय महाराणा भूपाल जयंती समारोह का आयोजन 22 से 26 फरवरी तक किया गया। इसके तहत 22 फरवरी को मोहता पार्क उदयपुर में स्थित महाराणा भूपाल सिंह की प्रतिमा का पंचगव्य अभिषेक किया गया। 23 फरवरी को श्रमजीवी महाविद्यालय के सोमानी सभागार में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। 24 फरवरी को गायत्री शक्तिपीठ सर्वऋतु विलास में हवन किया गया। 25 फरवरी को राजस्थान साहित्य अकादमी में पुष्पांजलि व सम्मान समारोह आयोजित किया गया एवं 26 फरवरी को मूक, बधिर व अंध विद्यालय के छात्रों में फल व प्रसाद का वितरण किया गया।

त्याग और बलिदान...

कार्यक्रम में कल्याण सिंह चौरड़िया ट्रस्ट, पृथ्वीराज सिंह मेमोरियल ट्रस्ट बुड़किया, जोर सिंह लोड़ता स्मृति संस्थान व देवराज हितकारिणी संस्थान द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली राजपूत समाज की प्रतिभाओं को सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम का आयोजन चाबा ग्राम के समाजबंधुओं द्वारा किया गया। कोटेश्वर धाम के सत्यम गिरी महाराज, सुनीता भाटी, मोती सिंह चौरड़िया, मोती सिंह सोमेसर, विजय सिंह लोड़ता, देहात भाजपा जिलाध्यक्ष मनोहर पालीवाल, पूर्व प्रधान भंवर सिंह इंदा, भगवान सिंह तेना सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति व क्षेत्रवासी कार्यक्रम में शामिल हुए एवं राव देवराज राठौड़ की अश्वारूढ़ प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित किए। उल्लेखनीय है कि राव देवराज राठौड़ सेतरावा के संस्थापक राव वीरमदेव राठौड़ के पुत्र थे। उन्होंने अपने शौर्य और प्रताप से आसपास के बड़े क्षेत्र पर अपना शासन स्थापित किया था। राव देवराज वीर होने के साथ-साथ सच्चे गोपालक और दूरदर्शी शासक भी थे। उनके वंशज क्षेत्र के 24 गांवों में निवास करते हैं।

कानसिंह वैरावत राठौड़ का 457वां बलिदान दिवस मनाया

24 फरवरी को पाली जिले में छोटी रानी में वैरावत राठौड़ वंशीय राजपूत समाज रानी खुर्द के तत्वावधान में वीर शिरोमणि कान सिंह जी वैरावत राठौड़ का 457वां बलिदान दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में आयोजन समिति के संयोजक गोविन्द सिंह राठौड़ ने कान सिंह जी का जीवन परिचय देते हुए बताया कि कान सिंह जी चित्तौड़ के तीसरे साके (विक्रम संवत 1624) में अकबर की सेना से लोहा लेते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे। उनके बलिदान दिवस पर हम सभी को क्षात्रधर्म पालन की प्रेरणा लेनी चाहिए। इस अवसर पर उपस्थित समाजबंधुओं ने कान सिंह जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की।

गिरी रणस्थली में 19 मार्च को होगा कूंपा जी की प्रतिमा का अनावरण

गिरी सुमेल युद्ध के नायक कूंपा जी राठौड़ की अष्टधातु से निर्मित प्रतिमा का अनावरण ब्यावर जिले के जैतारण क्षेत्र में स्थित गिरी रणस्थली में चैत्र बदी पंचमी, संवत 2081 (19 मार्च 2025) को प्रातः 11:15 बजे किया जाएगा। वीर शिरोमणि राव कूंपाजी राठौड़ मूर्ति निर्माण समिति आसोप के तत्वावधान में आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में अनेकों गणमान्य व्यक्ति एवं समाजबंधु शामिल होंगे।

परिपक्व ? लोकतंत्र

भारतीय लोकतंत्र के बारे में अक्सर यह कहा जाता है कि वह अब परिपक्व हो गया है, स्थिर, संतुलित और व्यापक स्वरूप धारण कर रहा है और भारत में लोकतंत्र के भविष्य को लेकर प्रारंभ में जो आशंकाएं जताई गई थी वे अब निर्मूल सिद्ध हो चुकी हैं। यह भी कहा जाता है कि भारतीय जनता ने लोकतंत्र को अंगीकार करके उसके अनुरूप व्यवहार करना सीख लिया है और इसीलिए भारतीय लोकतंत्र निरंतर परिपक्वता और सशक्तता की ओर बढ़ रहा है। यह बात सही है कि जब भारत ने अपनी स्वतंत्रता के समय लोकतंत्र को देश की शासन प्रणाली के रूप में स्वीकार किया था तब ब्रिटिश और यूरोपीय विचारकों का यह कहना था कि भारत जैसे गरीब और अशिक्षित देश (जिसे गरीब और अशिक्षित ब्रिटेन और यूरोप ने ही लूट कर बनाया था) में लोकतंत्र टिक नहीं पाएगा। उनका जोर इस तथ्य पर था कि यूरोपीय देश जो उनकी दृष्टि में सुसंस्कृत, सुसभ्य और सुशिक्षित थे, उन्हीं को लोकतंत्र को सही मायने में अंगीकार करने में सैकड़ो वर्ष लग गए, वहां भी महिलाओं और वंचित वर्गों को मताधिकार हासिल करने के लिए लंबा संघर्ष करना पड़ा, तो भारत जैसे देश में तो लोकतंत्र को स्थापित होने में बहुत अधिक लंबा समय लगेगा। लेकिन भारतीय संस्कृति में जो लचीलापन, व्यवस्था के प्रति स्वीकार भाव, नए या विपक्षी विचारों के प्रति सहिष्णुता और पारस्परिक सहयोग का वातावरण प्राचीन काल से ही यहां के मनीषियों, पूर्ववर्ती क्षत्रिय शासकों और सामान्य जनमानस द्वारा विकसित किया गया था, उसके कारण भारतीय जनमानस ने लोकतंत्र के नये स्वरूप को सहज भाव से अंगीकार कर लिया और उसके अनुरूप अपने को ढाल भी लिया। इस दृष्टिकोण से यह अवश्य कहा जा सकता है कि भारत के जनमानस ने लोकतंत्र को स्वीकार करने को लेकर परिपक्वता दिखाई। लेकिन उस लोकतंत्र के जो नेता बने, जो इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में सत्ता के दावेदार बने, क्या उनके आचरण के दृष्टिकोण से भी यह कहा जा सकता है कि भारतीय लोकतंत्र परिपक्व हुआ है या हो रहा है? क्या उन नेताओं के आचरण में कहीं से भी परिपक्वता की झलक दिखाई देती है? हाल ही में राजस्थान की विधानसभा में जो घटनाक्रम हुआ, विधानसभा के तथाकथित माननीय (?) सदस्यों द्वारा जो आचरण किया गया, जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया गया, क्या वह उनकी परिपक्वता की निशानी है? सत्ता पक्ष में मंत्री पद संभाल रहे व्यक्ति द्वारा देश की पूर्व प्रधानमंत्री को विपक्षी सदस्यों की 'दादी' कहकर संबोधित करना क्या बचकाना व्यवहार नहीं है और उसके बाद सत्ता पक्ष द्वारा मंत्री के बचाव में यह तर्क देना कि 'दादी' असंसदीय शब्द नहीं है बल्कि सम्मान सूचक शब्द है, और भी अधिक बचकाना है क्योंकि कई बार केवल कोई शब्द अपने आप में असंसदीय और असभ्य नहीं होता बल्कि उस शब्द को कहने का तरीका और भाव भी उसे असंसदीय और असभ्य बना देते हैं। लेकिन सत्ता पक्ष की इस परिपक्वता के उत्तर में विपक्ष द्वारा जिस प्रकार से कई कदम आगे बढ़कर मयार्दाओं का उल्लंघन किया गया, अपने दल में अपने आप को ज्यादा मजबूत दिखाने की होड़ में सभापति के प्रति अपशब्दों का प्रयोग किया गया और जूते मारने तक की बात कही गई, उसे देखकर क्या भारतीय लोकतंत्र को परिपक्वता की ओर बढ़ता हुआ कहा जा सकता है? ऐसे असभ्य आचरण को भी दंडित करने की अपेक्षा माफी मांगने और माफी देने, आंसू बहाने जैसे नाटकीय क्रियाकलाप करके जिस प्रकार से प्रकरण का पटाक्षेप करने का प्रयास किया गया, उससे क्या आगे ऐसे और प्रकरणों के लिए आधार भूमि तैयार नहीं होती। लोकतंत्र के तथाकथित कर्णधारों का यह आचरण केवल राजस्थान विधानसभा तक सीमित नहीं है बल्कि अन्य राज्यों की विधानसभाओं और भारतीय संसद में भी इस प्रकार का अमर्यादित और असभ्य आचरण अनेक बार देखने को मिलता रहता है। कुछ समय पूर्व ही भारतीय संसद में पक्ष-विपक्ष के सदस्यों में झड़प जैसी स्थिति बन गई थी जिसमें एक सांसद को चोट भी आई थी। जनप्रतिनिधि, जिन पर आचरण के आदर्श मानक स्थापित करने का दायित्व होता है, उन्हीं के द्वारा जब इस प्रकार से निम्न कोटि का आचरण किया जाता है तो सामान्य जन उन्हें अपना प्रतिनिधि किस प्रकार मान सकते हैं, उनसे किस प्रकार की प्रेरणा ले सकते हैं? आगे चलने वाले अग्रेसर का सबसे बड़ा दायित्व यही होता है कि वह अपने पीछे चलने वालों में अपने चरित्र और आचरण से श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा पैदा करे लेकिन जो सामान्य शिष्टाचार और शाब्दिक संयम से भी हीन हों, उन्हें क्या जनप्रतिनिधि या आगे चलने वाला कहा जा सकता है? लोकतंत्र के प्रतिनिधि राजनेताओं के इस प्रकार के आचरण को देखकर तो यही कहा जा सकता है कि भारतीय लोकतंत्र परिपक्व होने की बजाय मयार्दाहीनता की ओर बढ़ रहा है। भारतीय जनमानस ने लोकतंत्र को अंगीकार करने में जो परिपक्वता दिखाई थी, वह भी सही प्रतिनिधियों को ना चुनने की अपरिपक्वता के कारण अप्रासंगिक और अप्रभावी बनती जा रही है। इसलिए यह हम मतदाताओं का ही दायित्व बनता है कि हम अपने प्रतिनिधियों को चुनने में भी परिपक्वता दिखाएं और जो प्रतिनिधि अशोभनीय, अमर्यादित और अशिष्ट आचरण सार्वजनिक जीवन में करते हैं, उन्हें हम अपना प्रतिनिधित्व कभी न सौंपे। हम अपना प्रतिनिधित्व उन लोगों को सौंपे जो वास्तव में भारतीयता के आदर्श जीवन मूल्यों का सम्मान करते हों और उनके अनुरूप आचरण करते हों तभी हमारा लोकतंत्र वास्तविक अर्थों में परिपक्व हो सकेगा और भारतीय संस्कृति को संरक्षित और पोषित करने वाली व्यवस्था के रूप में अपनी भूमिका निभा सकेगा।

डूंगर सिंह सेवनियाला का देहावसान

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक **श्री डूंगर सिंह सेवनियाला** का देहावसान 29 जनवरी 2025 को हो गया। उन्होंने अपने जीवन काल में संघ के कुल बारह शिविरों में प्रशिक्षण लिया जिनमें दो उच्च प्रशिक्षण शिविर, दो माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर व आठ प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर शामिल हैं। 18 से 20 अगस्त 1956 तक जालौर में आयोजित होने वाला प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर उनका प्रथम शिविर था। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

श्री डूंगर सिंह

राजपूतों के पराक्रम और संघर्ष से जीवित रही भारतीय संस्कृति: स्वामी धर्मबंधु

(कूच बिहार में समारोह पूर्वक मनाई वीर चिलाराय की 515वीं जयंती)

अरब आक्रमणों के जिस दौर में मिस्र, ईरान, इराक, ग्रीक, रोम, मंगोल जैसी अनेकों सभ्यताएं समाप्त हो गईं, उस दौर में भी यदि भारतीय संस्कृति जीवित रह सकी तो उसका कारण राजपूतों का पराक्रम और संघर्ष ही है। भारत पर 460 ईस्वी पूर्व में पर्शियन आक्रमण से लेकर मुगलकाल तक लगातार आक्रमण होते रहे लेकिन राजपूतों की तलवार ने भारत की रक्षा की और यहां की सभ्यता, संस्कृति और धर्म को नष्ट नहीं होने दिया। हमें राजपूतों की तलवार और उनके बलिदान का आभारी होना चाहिए जिनके कारण हम आज भी अपने धर्म-कर्म का निर्वहन कर पा रहे हैं। 530 वर्ष से कूच बिहार के राजपरिवार के प्रति यहां के लोगों में ही आस्था और विश्वास बना हुआ है यह इस बलिदान के प्रति देशवासियों की कृतज्ञता का ही प्रमाण है। उपर्युक्त बात श्री वैदिक मिशन ट्रस्ट के संस्थापक स्वामी धर्मबंधु ने 12 फरवरी को पश्चिम बंगाल के कूचबिहार में आयोजित महावीर चिलाराय जयंती समारोह को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि हमें इतिहास का अध्ययन वर्तमान को समझने के लिए करना चाहिए और वर्तमान को समझ कर भविष्य की रणनीति बनानी चाहिए। याचना करने से कभी भी कोई प्राप्ति नहीं होती है, उसके लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। जब तक हमारे पास पुरुषार्थ था तब तक हमारी सीमाएं काबुल और कंधार तक फैली हुई थीं और सभी क्षेत्रों में हम सबसे आगे थे। आज भी हमें पुरुषार्थी बनना होगा और वर्तमान युग के साधनों को अपनाकर तकनीक, ज्ञान, शिक्षा आदि क्षेत्रों में आगे रहना होगा। हमें अपने में वह योग्यता पैदा करनी पड़ेगी कि हमें किसी से कुछ मांगना ना पड़े बल्कि हम जो कुछ चाहते हैं वह स्वयं ही अपने पुरुषार्थ से प्राप्त कर लें। महावीर चिलाराय (शुक्ल ध्वज) जी की 515वीं जयंती पर ग्रेटर कूच बिहार पीपुल्स एसोसिएशन के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में हजारों की संख्या में क्षेत्रवासी शामिल हुए और वीर चिलाराय के प्रति अपनी श्रद्धा व कृतज्ञता प्रकट की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्यसभा सांसद व चिलाराय जी के वंशज नागेन्द्र रॉय ने कहा कि यह गौरव की बात है कि आज हम सभी एक मंच पर एकत्रित हुए हैं। हमारे पूर्वजों ने हजारों वर्ष तक इस भूमि की रक्षा की। देश की आजादी के समय भी सैकड़ों रजवाड़ों ने देश के एकीकरण में शामिल होकर अपना योगदान दिया। उनके प्रति सभी को सम्मान की भावना रखनी चाहिए। शक्ति सिंह बांदीकुई ने कहा कि राजस्थान और कूच बिहार का संबंध बहुत पुराना है। 500 वर्ष पूर्व जब आमेर के महाराजा मानसिंह काबुल फतेह करने के लिए जा रहे थे तब महावीर चिलाराय ने उनका सहयोग किया था। चिलाराय जी की भतीजी क्षमा कुंवरी जी का विवाह मानसिंह जी से हुआ था और मानसिंह जी के देहावसान के बाद वे उनके साथ सती हुई थीं। कूच बिहार की राजकुमारी गायत्री देवी जो आगे चलकर जयपुर की राजमाता बनीं, उन्होंने स्वतंत्र पार्टी की स्थापना कर राजस्थान में राजनीति की नई इबारत लिखी थी। उन्होंने आगे कहा कि क्रांति लाने के लिए मजबूत संकल्प शक्ति की आवश्यकता होती है। यदि हमारी संकल्प शक्ति प्रबल होगी तो उसके सामने बड़ी से बड़ी चुनौती भी घुटने टेक देगी। राजेंद्र सिंह नरूका ने कहा कि चिलाराय की वीरता और शौर्य से हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने कूच बिहार को केंद्र शासित प्रदेश बनाने की मांग का समर्थन किया। कवि गजेंद्र सिंह सोलंकी ने कूच बिहार की धरती की महिमा में गीत प्रस्तुत किया।

श्री मल्लीनाथ छात्रावास का वार्षिकोत्सव एवं विदाई समारोह

बाड़मेर के स्टेशन रोड स्थित श्री मल्लीनाथ छात्रावास का वार्षिकोत्सव एवं विदाई समारोह 23 फरवरी को आयोजित हुआ। समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि कर्नल बीएस रावत (डिप्टी कमांडर, जालीपा मिलिट्री स्टेशन) ने कहा कि युवा अपनी योग्यता एवं प्रतिभा के बल पर आगे बढ़ें एवं अपने लक्ष्य को प्राप्त करें। आपके सामने पूरा आसमान खुला है, इसलिए बड़े से बड़ा लक्ष्य चुनें और उसे प्राप्त करने में जुट जाएं। विद्यार्थी जीवन सीखने का काल होता है, इसका यदि आपने सदुपयोग कर लिया तो जीवन में आप ऊंचाइयों तक पहुंच सकेंगे। उन्होंने कहा कि आपके शिक्षक, आपके अभिभावक आपको सहयोग व मार्गदर्शन दे सकते हैं परंतु मेहनत आपको ही करनी होगी। आपके भविष्य को संवारना आपके अपने ही हाथों में है। विशिष्ट अतिथि दिलीप कुमार सिंह (महाप्रबंधक, एसडब्ल्यूएमएल) ने कहा कि जीवन में संघर्ष का आना स्वाभाविक है। इन संघर्षों से विचलित हुए बिना अपने पथ पर अडिग रहने वाले ही सभी के लिए प्रेरणास्रोत बनते हैं। उन्होंने कहा कि केवल सरकारी नौकरी प्राप्त करना ही अच्छे भविष्य के निर्माण का एकमात्र तरीका नहीं है बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी आप अपने परिश्रम के बल पर सफलता प्राप्त कर सकते हैं। समारोह के अध्यक्ष श्रवण सिंह राजावत (यूआईटी सचिव) ने कहा कि अनुशासन और संकल्प शक्ति ही अध्ययन में सफलता की कुंजी है। नियमितता और आत्मविश्वास के गुण जिसके भीतर हैं उसे जीवन के किसी भी पड़ाव पर असफलता का सामना नहीं करना पड़ता। उन्होंने कहा कि आपके माता-पिता की आशाएं आप पर टिकी हैं, उन आशाओं को पूरा करने के लिए ईमानदारी पूर्वक अध्ययन करें एवं अपने समय को व्यर्थ नहीं गंवाएं। संस्थान के अध्यक्ष रावत त्रिभुवन सिंह ने कहा कि विद्यार्थियों को अपने परिवार व समाज से सदैव जुड़े रहना चाहिए। अपनी जड़ों से दूर होने वाला जीवन में चाहे कितनी भी सफलता प्राप्त कर ले, वह सफलता निरर्थक ही सिद्ध होती है। संस्थान के मंत्री कमल सिंह चूली ने छात्रावास के प्रारंभ से लेकर अभी तक की यात्रा एवं इस दौरान आई विभिन्न चुनौतियों के बारे में अपने अनुभव साझा किए एवं सभी अतिथियों का स्वागत किया। छात्रावास के व्यवस्थापक महिपाल सिंह चूली ने संस्थान का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। समारोह के दौरान प्रतिभावान विद्यार्थियों एवं संस्थान को सहयोग करने वाले भामाशाहों को सम्मानित भी किया गया। मंच संचालन कान सिंह खारा, यशपाल सिंह वरिया व खेत सिंह आसाड़ी ने किया।

हिमाचल प्रदेश प्रशासनिक सेवा परीक्षा में चयनित राजपूत प्रतिभाएं

हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग धारा आयोजित हिमाचल प्रदेश प्रशासनिक सेवा परीक्षा के अंतिम परिणाम 6 जनवरी को घोषित किए गए। इन परिणामों में कुल 20 अभ्यर्थी सफल घोषित किए गए जिनमें से 6 अभ्यर्थी राजपूत समाज से हैं। सफल राजपूत अभ्यर्थियों की सूची यहां प्रकाशित की जा रही है -

(1) मोहित सिंह (एचएएस) - नगरोटा के गांव सूरियां जिला कांगड़ा के मूल निवासी हैं।

(2) जितेंद्र चंदेल (एचएएस) - बिलासपुर जिले के घुमारवीं उपमंडल के तहत गांव घुमाणी के निवासी हैं।

(3) संजय कुमार तोमर (जिला पंचायत अधिकारी) - जिला सिरमौर (ट्रांसगिरी) के हाटी क्षेत्र के आँजभोज क्षेत्र के शमियाला गाँव मूल के निवासी हैं।

(4) नितिन राणा (जिला वैलफेयर कम प्रोबेशन अधिकारी) - जिला चंबा के भटियात विधानसभा क्षेत्र के गांव सिहुंता के मूल निवासी हैं।

(5) अखिल सिंह ठाकुर (असिस्टेंट रजिस्ट्रार) - गांव बलयाली, जिला सिरमौर के निवासी हैं।

(6) करण ठाकुर (खाद्य नियंत्रण कमिश्नर) - सिरमौर जिले के निवासी हैं।

उपरोक्त सभी को हिमाचल प्रशासनिक सेवा परीक्षा उत्तीर्ण कर अधिकारी बनने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

एस के सिंह, अध्यक्ष,
राजपूत एकता मिशन (रजि. दिल्ली)

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (स्वत्वाधिकारी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राजेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, डी बी कॉर्प लिमिटेड, प्लोट नंबर-01, मंगलम कनक वाटिका के पीछे, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, रेल्वे क्रोसिंग के पास, बिलवा, शिवदासपुरा, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)-303903 (दूरभाष- 6658888) से मुद्रित एवं ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष- 2466353) से प्रकाशित। संपादक- राजेंद्र सिंह राठौड़।
Email- pathprerak1997@gmail.com Website- www.shrikys.org